आईना

काव्य-संग्रह

ऋतु गुप्ता

आईना

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-93-6026-156-6

Price: ₹ 171.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher.

Printed in India

आईना

काव्य-संग्रह

ऋतु गुप्ता

समर्पण

मैं अपना यह काव्य – संग्रह अपने पूज्यनीय माँ–बाऊजी एवं अपने सास – ससुर की पचासवीं शादी की साल गिरह पर समर्पित करती हूँ। मुझे बेहद खुशी होगी अगर मेरा यह संग्रह उन्हें पसंद आया। मेरे लिए इससे बढ कर आशीर्वाद और कुछ भी नहीं हो सकता।

मेरे प्रेरणा स्त्रोत

मेरा बचपन हरियाणा के एक छोटे से गांव में बीता है। जहाँ एक ओर बड़ी–बड़ी हवेलियां दूसरी ओर कच्चे व छोटे घर हैं। जब मैं छोटी थी तो सिर्फ एक छोटा सा सरकारी स्कूल था। हालांकि अब वहाँ काफी विकास हो चुका है। अब भी याद है वो दिन स्कूल की घंटी बजते ही हम घर से बस्ता उठाकर उसी और दौड़ पढ़ते थे।

लंच टाइम में घर आकर खाना खा कर जाते। बचपन में एक अलग ही मस्ती होती थी गर्मी की छुट्टियों में गुड्डे – गुड़ियों का खेल खेलते, दुकान लगाते। जब हमारी छत पर हम पक्षियों को दाना डालते तब मोरों का, कबूतरों का, चिड़ियों का व अन्य पक्षियों का झुंड छत पर देखे हम ताली बजा बजा कर खुश होते।

कई बार बिल्ली और कुत्तों से उनको बचाने के लिए छुप कर उनको देखते। चिड़िया जब घर में हवेली की मुंडेरों पर व छज्जों में घोंसला बना लेती। तब हम चुप – चुप कर उनके घोंसलों को देखा करते कि कितने अंडे वहां मौजूद है, और जब कई बार कोई अंडा नीचे गिर जाता या फिर कोई ऐसा चूजा जो अभी उड़ना ना सिखा हो हम उसे चुप के से उठा लेते उनके लिए पानी रखते, दाना रखते ऐसा करके हम बहुत खुश होते इन यादों के सहारे बचपन बीता जा रहा था जब गांव में कभी बाढ़ आती और उस में

बह कर मछली आती तो हमारी खुशी का ठिकाना न रहता। फिर हम कागज की नाव बनाते और उसमें तैराते यह सब करके में बहुत आनंद आता था।

बचपन की यादें बहुत सुहानी होती हैं, मुझे पहाड़, नदी–नाले सदा ही बहुत प्रिय रहे हैं। मुझे रात सपनों में भी इनके बार–बार ख्याल आते हैं। मुझे प्रकृति से बहुत प्यार है, मुझे एकांत स्थान वह प्रकृति की गोद में बस जाना बहुत पसंद है। जब बारिश के दिन होते हैं तो मैं बादलों की आकृतियों में खो जाती हूं, वहां मुझे जीवन की सच्चाई का एहसास होने लगता है।

मैंने गांव में जहां लोगों को बुरी तरह से झगड़ते देखा है, थोड़ी देर बाद आपस में गले लगते देखा है। इन सब बातों ने मेरे बचपन के कोरे मन पर गहरा प्रभाव डाला।

जैसे–जैसे बचपन बीता मुझे जिंदगी की थोड़ी समझ होने लगी लोगों का स्वार्थ प्रस्थ होना, जज्बाती होना सब समझ आने लगा, नौटंकी, झूठी हमदर्दी और अपनेपन का दिखावा सब बेकार की बातें लगने लगी। अब मैं इंसान को बखूबी पहचानने लगी थी, औरतों के साथ होते अन्याय उनको बच्चा पैदा करने की मशीन, घर का काम करने वाली आया वह हर अन्याय सहने को मजबूर एक बुत की तरह समझा गया।

वक्त के साथ मैंने वक्त की अहमियत को भी जाना यह समझने की कोशिश की, कि वक्त ना तो किसी के लिए रुकता है ना ही कभी रुकेगा। वह सदैव चलता रहता है वह उसी का साथ देता है जो उसको समझते हैं।

अपने को उसी के अनुसार ढाल लेते हैं। मैंने मजबूर बेबस मजदूर मां को भी बहुत पास से देखा है जो सब कुछ सहन करने के बाद भी सिर्फ परिवार को चलाने की खातिर सदैव प्रयतनशील रहती है। मैंने समय के साथ विचारों में अंतर को भी बखूबी देखा है।

घरों में बुजुर्गों की हालत को पास से देखा है। इन सब बातों ने मेरे मन को झझकोर कर रख दिया। और इन्हीं बातों ने मेरे कोमल मन को प्रेरित किया कुछ लिखने के लिए व अपने दिल का बोझ हल्का करने के लिए मेरी हिंदी की इन्हीं कुछ रचनाओं ने काव्य संग्रह का रुप ले लिया जिन्हे मैं आप लोगों के साथ बांटने जा रही हूँ।

लेखक के बारे में

इस काव्य संग्रह की लेखिका का जन्म एक छोटे से गांव गुजरवास में एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। बचपन से ही स्वभाव से वह संकोची व अंतर्मुखी थी। वे शुरू से ही निराला जी की व मुंशी प्रेमचंद की प्रशंसक थी। 15 साल की आयु से ही इन्होंने ने लिखना शुरू कर दिया। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही सरकारी स्कूल से हुई बाद में कॉलेज की पढ़ाई पास के ही कस्बे अटेली मंडी के सरकारी कॉलेज से पूरी की इन्होंने इकोनॉमिक्स मे मास्टर ऑफ आर्ट की डिग्री ली है। शादी के बाद इन्होंने बेचलर इन एजुकेशन मे डिग्री हासिल की है अपने पति कि प्रेरणा से लेखन कार्य जारी रखा।

इनकी अपनी कुछ रचनाएं पेपर व पत्रिका में भी छपे इनकी जिंदगी में इनके माँ–बाप, भाई–बहन विशेषकर पति व बच्चों का विशेष स्थान रहा है, उन्हीं की प्रेरणा से वो काव्य संग्रह छपवाने की हिम्मत कर पाई हैं उनका पहला यह संग्रह शायद लोगों को पसंद आए और फिर से हिम्मत जुटा पाएगी कुछ और लिखने की।

आज की इस व्यस्त जिन्दगी मे हर इसानं को उचित मार्ग–दर्शन की आवश्यकता है। कभी अपने पथ से भटकाव, कभी अपनो से अलगाव, कभी असफलताओं से मिली निराशा उसे विचलित कर देती

है। तब वह सकून की तलाश मे बेचैन हो इधर–उधर घूमता रहता है।

लेकिन आशाओं का कोई न कोई दरवाजा जरूर खूला रहता है जरूरत है तो सिर्फ पहचाने की। एक ऐसे आईने की जिसमे वह असलियत को पहचान दर–दर की ठोकर खाने से बच सके। आज की युवा पीढी मे सब्र की कमी है। अगर आत्म–विश्वास हो और हौसले बुलंद हो तो हर विपदा टल जाती है। सही कहा है– 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'।

विचारों का पीढी दर पीढ़ी अंतर आना स्वभाविक है। अगर हम उसी हिसाब से अपने आप को ढाल लेते हैं तब हमारी समस्याएं थोड़ी कम हो जाती हैं, इस नवयुग में लड़के और लड़कियों में भेदभाव करना भी बेकार की बात है, लड़की हर तरह से लड़कों से आगे निकल रही हैं। इस तरह की और अनेक समस्याएं हमारी जिंदगी को मुसीबतों में उलझा देती हैं। और तब एकांत की व सकून की तलाश मे कभी प्रकृति की गोद मे पहुँच जाते हैं तो कभी भी अपनी पुरानी यादों मे खो जाना चाहते हैं। इस काव्य–संग्रह में इन्हीं सब बातों का समाधान करने की कोशिश की गई है।

कागज से किताब तक

मेरा नाता कलम व कागज से बहुत पुराना है। अंतर्मुखी होने की वजह से जो मैं बोल नहीं पाती थी वो मैं लिखकर एकांत में भड़ास निकाल देती थी। इस आदत ने मुझे लिखने को ओर प्रोत्साहित किया। और फिर जो भी मैं अपने लिए व दूसरों के लिए महसूस करती उसे मैं अपनी डायरी के साथ बांटती। उसके बाद मैं बेहद हल्का महसूस करती। मेरा मन बहुत ही कोमल है मेरे अंदर से खुद–ब–खुद कविताएं बनने लगती और कलम कागज पर चलने लगती।

मेरे एकांत प्रिय होने ने भी मुझे प्रकृति के और करीब ला दिया। समाज में बुजुर्गों की दुर्दशा, बाल विवाह, आज के युवकों की बढ़ती हुई उम्मीदें, उनकी निराशा का कारण, समाज में महिलाओं की कदर, उनका रुतबा, मेरा अपने गांव से प्यार और वक्त की महत्ता ऐसे अनेक कारण हैं जो मेरे लिखने का कारण बनते गए और मेरी भावनाओं ने कभी लेख कभी कहानी और कभी कविता का रूप ले लिया और फिर मेरा मन करने लगा इनको सबके साथ बांटने का।

जो केवल अभी तक मेरे और मेरे कागजों तक ही सीमित था। मेरे अपनों की प्रेरणा ने मुझे लिखने को और प्रोत्साहित किया वह किताब के लिए प्रेरित किया। अगर मेरे विचार पसंद किए जाते हैं तो मेरे लिए यह सौभाग्य की बात होगी।

आईना

एक वक्त था जब मैं
घंटों आईने मे निहारा करती,
जिन्दगी मे अपने किसी के
आने की राह ताका करती।

हर पल सपनो का
एक नया महल खड़ा किया करती,
कभी उसको बनाती
कभी खुद ही ढा दिया करती।

मन–सागर मे ज्वार
सदैव आया रहता,
एक मीठा – सा
खुमार छाया रहता।

चुपके से एक दिन
पल वो आ ही गया,
जिन्दगी को मेरी
मंजिल बता ही गया।

आईना अब भी देखती हूँ
लेकिन एक जरूरत तक,
राहें अब भी ताकती हूँ
लेकिन सबके घर लौट आने तक।

अब कुछ ऐसा है
मेरी जिन्दगी मे
पक्षी जैसे लौट आता है
शाम को नीङ मे ।

बचपन

मैं वापिस बचपन में जाना चाहती हूँ,
मोङ जीव नैया पिछे
मिठी यादों मे खोना चाहती हूँ,
फिर पार नहीं तरना चाहती हूँ।

छलावे से दूर उस जिन्दगी को
आगोश मे भरना चाहती हूँ,
उस तुतलाती जुबान को कैद
कर लेना चाहती हूँ।

सो माँ की गोद मे
हर दर्द भूलना चाहती हूँ,
फिर से पकङ उसकी उंगली
नया कदम बढ़ाना चाहती हूँ।

आईना

मेरा जन्म हरियाणा के एक छोटे से गांव गुजरवास में हुआ। मेरी प्रारंभिक शिक्षा वहाँ के सरकारी स्कूल से पूरी हुई। पास के एक छोटे से कस्बे में दसवीं तक पढ़ाई की और वहीं के कॉलेज से स्नातक में डिग्री हासिल की। प्रारंभ से ही मैं चुप–चुप व एकांत प्रिय थी। जब मैं दसवी कक्षा में थी तभी से मुझे कविता व लेख लिखने की आदत है। निराला जी और मुंशी प्रेमचंद जी मेरे आदर्श रहे हैं। हम चार बहन भाइयों में से मेरी ही शिक्षा गांव में रहते हुए पूरी हुई। मेरे अकेलेपन ने मुझे और अंतर्मुखी बना दिया। मेरी डायरी और मेरी कलम ही मेरे दोस्त बन गए। मैं अपना हर सुख–दुख उनसे बाँटने लगी। उसके बाद मैंने स्नातकोत्तर इकोनॉमिक्स में किया। उसके बाद मेरी शादी हो गई फिर प्यारे–प्यारे दो बच्चे। लेकिन मेरी डायरी लिखना और कविताएं लिखना नहीं छूट पाए। उसके बाद मैंने बी.एड की है। अब मैं अपनी कुछ रचनाएं जैसे कविता, लेख व कहानियां पत्र–पत्रिकाओं में भेजने लगी। अब भी मैं अपनी कलम वह डायरी को ही अपना सबसे बड़ा दोस्त वह हमदर्द मानती हूँ। मेरा प्यार कभी भी इनके लिए कम नही हो पाया।

लेखक से संपर्क हेतु :
ritugupta2205@gmail.com

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE
ISBN 978-93-6026-156-6
9 789360 261566